धुंध है और खोई हैं चीजे

(धर्म संस्कृति के मूलतत्व और स्त्री)

शशिकला राय

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

धुंध है और खोई है चीजें
सुबह के इंतजार में
जैसी हर तरफ सोई
सोई हैं चीजें

– सूर्यभानुगप्त

स्त्रीकरण की प्रक्रिया में स्त्री जीवन से अधिक रीतिरिवाज मूल्य धर्म संस्कृति महत्वपूर्ण हो गए। पितृसत्तात्मकता क्रूरता में भारत, पाकिस्तान, एथेन्स क धरती का भेद मिट गया। हव्वा हो या श्रध्दा या असातीरी सब की व्यथा एक सी रही। जब मैं इस यात्रा की साझीदारी पर निकली तो कलम अपनी राह भूल गयी जो कुछ देखा पाया उन्हें एक साथ रखने की प्रक्रिया में एक बेतरतीब कोलाज बना जिसमें जगह जगह नील सा उभरा पड़ा है जहाँ देह बची वहाँ आत्मा पर यह नील देखा जा सकता है। यहाँ सारा लोहा भी उन्हीं का है और धार भी उन्हीं की सीमोन ने पूछा ''स्त्री क्या है?'' पर उससे पहले पूछा ''क्या स्त्री है।'' आधी आबादी के बावजूद स्त्री माँ है बहन है पत्नी है प्रेमिका है बेटी परन्तु क्या स्त्री है? मृत स्त्रियों के जिंदा सवाल हुए विनोद पदरज कहते हैं–('खण्डीप निवाजीपुरा भालपुर की औरतें')

जब भी कोई औरत कटती है, गाँव की
पंचायत जुड़ती है
सहन सगती नही अ भोटियान में
होती रह बै छोटी बड़ी बात घर गिरस्ती में
ई तो अच्छयौ हुयो छोराय छोड़ गयी
ई तो खासियत है, हमारे गाँव की

VEETHIKA-*An International Interdisciplinary Research Journal*©2015 QTanalytics
E-ISSN: 2454-342x

हर साल पाँच सात केस होवै

पण पुलिस थाणा नहीं

भोटियान को का है भतौरी पड़ी हैं, और लायेंगे। रोबिन जैन

यह धर्म के मूल तत्वों की रस्सियों से बुना समाजशास्त्र हैं। नैतिकता संस्कृति, मूल्य रूढ़ियों के जंजीरों से जकड़ी क्या स्त्री है? क्या इसके लिए उर्ध्वमूल जैसी कोई संकल्पना है। भारतीय समाज में लड़कियों की तुलना गाय से की जाती है। अरे बिलकुल गऊ लड़की है। वजूदहीन माने गाय। उन्नीसवीं सदीं के प्रारंभ में ही स्त्री देह को सांप्रदायिक विमर्श के अहमतत्व की तरह इस्तेमाल किया गया। हिन्दू महिला को शक्तिशाली हिन्दू संतान पैदा करने में सक्षम सामर्थ्यवान कोंख के रूप में देखा जाने लगा। जो केवल कोंख थी उसके अलावा कुछ नहीं उसके लिए 'कल्याण' का अंक आदर्श स्थितियाँ तय करने लगा। 'रजोदर्शन के बाद स्त्रियों को बहुत काल तक काम और मातृत्व के अंगों का व्यवहार न करने देना उन्हें चिंतित रखता है, और बहुत सी बीमारियों को जन्म देता है।' लेकिन इन्हीं नैतिकतावादियों ने बालविधवा विवाह का विरोध किया। क्यों क्या वह जवान नहीं होती? वह रजस्वला नहीं होती? पाखंड यही पाखण्ड नारी भूशण के मूल तत्व निर्मित करता है। लज्जा नारी का आभूषण है। पहले आपने यह तय किया फिर नारी को अपने रूप, गुण, बुध्दि तीनों पर लज्जित होना चाहिए अगर वह नहीं होती तो उन्हें डायन घोषित कर दिया जायेगा। विनय, संयम, तप, संतोष, क्षमा, वीरता, धीरता, गंभीरता, सहिष्णूता, सफाई, श्रमशीलता, परिवार, भक्ति, सादगी और सतीत्व, पतिव्रत, कर्मबंधन स्त्री को स्त्री बनाते हैं। यही धर्म का कहना है।इसे तोड़ने का प्रयास नारीजागरण नहीं, "नारी मरण" कहा जा सकता है। नारी दूषण क्या है? कलह, निंदा हिंसा, ईश्या, भेद विलासिता, शौकीनी, फिजूलखर्च, गर्व अभिमान, दिखावा, विशाद, वाचालता, व्यभिचार, हँसी मजाक। इसिलिए वह नरक का द्वार है इसीलिए वह "ताड़न" की अधिकारी भी है।

नरी सुभाऊ सत्य सब कहहिं

अवगुण आठ सदा उर रहहिं

सहज अपावन नारी, अर्थात नारी तो सहज ही अपावन होती है। सब सच ही तो कहते हैं, कितनी भी अच्छी स्त्री हो परन्तु उसके भीतर सदा आठ अवगुण रहते हैं।तुलसीदास ने लिखा है जिनके लिए "सियाराम मैं सब जग जानी"। सारा जगत सियाराममय है। तब भी नारी सहज अपावन होती है। तो मैं वही अपवित्र नारी हूँ अपने भीतर आठ अवगुण समेटे पर मैं तुलसीदास जी से नाराज नहीं हूँ, जानते हैं क्यों? क्यों कि अकेली

वाणी प्रतिनीधि नहीं होता है। परवतु तुलसीदास अकेले नहीं उनके पूरा मुँह से पितृसत्तात्मक समाज बोल रहा था। कबीर भी तो कुछ इसी तरह का कह जाते हैं –

नारी की झाईं पड़त अंधा होत भुजंग

कबीरा तिनकी कवन गति जो नित

नारी के संग

तो हे कबीर बाबू फिर प्रभु से मिलने के लिए आपको वही नारी बनने की तड़प क्यों है?

तन रत कीन्हीं मन रत कीन्हीं

पंचतत्त बाराती रामदेव मोरे पाहुन

आए मैं यौवन मदमाती

सीता ने लक्ष्मण रेखा लाँघ दी लक्ष्मण रेखा यानि मर्यादा। यह मर्यादा कौन तय करेगा पुरूष ! स्त्रियों को यह मर्यादा नहीं पार करनी चाहिए। उन्हें खुद निर्णय ही नहीं लेना चाहिए। पतिव्रता को सृष्टि की सर्वाधिक शक्तिशाली स्त्री के रूप में देखा गया। पतिव्रता तो शाण्डिली की तरह होती है। कोढ़ी पति का दिल वेश्या पर आ जाए तो वह अपने पति का मिलन वेश्या से कराती है और हमारा शास्त्र इसे धार्मिक कार्य की तरह देखता है। तुलसीदास लिखते हैं –

बुध्दि रोग सब जड़मति होना

अंध बधिर क्रोधी अति दीना

ऐसहुँ पतिकर कर अपमाना

नारि पावें यमपुर नाना।

बुरे से बुरे पति का अपमान पतिव्रता स्त्री को नहीं करना चाहिए। व बाबासाहेब कहते हैं पति शराब पीकर आये तो भोजन मत दीजिए और सिनेमा कहता है कि, उसके जूते उतारिए। चादर उढ़ाइए। गाली खाइए और भारतीय स्त्री परंपरा के आदर्श फ्रेम में शोभिए। गैरबराबरी की इस नैतिक रचना के आधार पर अग्निपरीक्षाएँ। यहाँ राम में व बेबी कांबले की आत्मकथा में वर्णित पति में कोई अंतर नहीं। मनुस्मृति कहता है कि यदि पत्नी अपनी इच्छा से चली जाय फिर लौट आए तब भी उसे पत्नी नहीं मानना चाहिए उसे मृत घोषित कर देना चाहिए। उसका श्राध्द कर देना चाहिए परन्तु यदि पति दुष्चरित्र हो तो भी उसका त्याग नहीं करना चाहिए। उसे समझाना चाहिए। मंदोदरी की तरह। तरह सारे मूल्यों का निवेशन स्त्री में

हो। क्यों कि स्त्री संस्कृति की प्रहरी है। स्त्रियों पर संतोष क्षमा संयम, त्याग समर्पण नैतिक बोझ की तरह लादा जाता है। ताकि पुरूष सत्ता की अराजकता ज्यों की त्यों सुरक्षित रहे। आत्मसंयम माने सामाजिक दासता के सधे हुए तंत्र के प्रति इच्छा से सम्पूर्ण समर्पण। एंगेल्स कहते हैं, परिवार की स्थापना का मतलब है स्त्रीलिंग के लिए सतीत्व की अवधारणा इसने स्त्रियों को निजी संपत्ति के रूप में बदल कर रख दिया। ताराबाई शिंदे लिखती हैं,''उस जमाने के ऋषियों का भी क्या कहना कोई हिरणी के पेट से कोई गाय के पेट से, कोई पक्षिणी के पेट से जन्म लेता है और इनका कहा वेद वाक्य हो गया भुगतना पड़ा नारी को। सभाओं में लम्बे–लम्बे भाषण देकर मूँछों पर हाथ फेरते फेरते लौट आना यही आपका पराक्रम है।'' शास्त्रकर्ताओं की तिरछी नजर स्त्रियों पर ही क्यों? सतीत्व की अवधारणा के साथ ही चरित्र की अवधारणा ने भी स्त्रियों की जिन्दगी को गर्त में ढकेल दिया। बदचलन तों बीवीयाँ होती हैं। पति तो परमेश्वर होता है। 'स्त्रियाँ पुरूषों को अपने जाल में फँसा लेती है। मनु तो यह भी कहते हैं, स्त्रियाँ पुरूषों के रूप रंग उम्र किसी पर भी विचार नहीं करती जैसा भी पुरूष मिल जाय भोगरत हो जाती है।' सृष्टिकर्ता ने काम, क्रोध, बेईमानी चरित्रहीनता दुर्गुण इनमें कूट कूट कर भरा है। मनु आपने बड़ा नुकसान किया है। हम स्त्रियों का अब तक किए जा रहे हैं। जयपुर के स्थानीय न्यायालय में आप की मूर्ति न्याय की किस अवधारणा के तहत लगी है नहीं जानती। मनुस्मृति का दहन हुआ पर मनु तो पित्तृसत्तात्मक सत्ता का मास्तिष्क है। चिरजीवी उन्हें न आग जला सकती है। न वायु उड़ा सकती है। बलात्कार पुरूष करता है चरित्रहीन स्त्रियाँ होती हैं। तिहाड़ जेल के बलात्कारी पुरूषों के इंटरव्यू से पता चलता है कि उन्हें अपने किए का पश्चाताप नहीं है, ऐसे कपड़ों में क्यों थी? सूने में क्या कर रहीं थीं? अभी अभी फेसबुक पर एक मित्र की पोस्ट पढ़ी वे मेरी प्रशंसा इसलिए करते हैं कि मैं कट्टर हिन्दूत्व की विरोधी हूँ। उन्होंने लिखा है – रहोगी तुम नकाब में तो मर्द रहेगा औकात में।तो स्त्री के कपड़े मर्द की औकात तय करते हैं। चारसाल की बच्ची का भी बलात्कार होता है। जयपुर के पास कब्र खोद कर स्त्री को निकाल कर बलात्कार किया गया। नागराज मंजुले बताते है यह बचपन में हमारे लिए देखना आम अनुभव था। खिड़की से हॉस्पीटल के ठंडेघर का नजारा।गीता में लिखा है, शरीर मिथ्या है। नष्वर है। आत्मा अमर है। तो जरा यह बताइए कि बलात्कार देह का होता है या आत्मा का। मूसूवी यहूदी शरीअत के यशबिन लिखते हैं –'औरत से ही गुनाह शुरू होता है उसी के शबब हम मरते हैं।' एथेन्स आधुनिक जनतंत्र और कलाओं का जनक है, किसी समय वहाँ जब पत्नी बीमार हो या संतान के जन्म के बाद स्वस्थ हो रही हो तो पति के साथ प्रेमिका या रखैल सोती थी उस दौरान पत्नी को कमरे में बंद कर दिया जाता था कानून की सख्त पाबंदी लगायी जाती थी स्पेशल मजिस्ट्रेट

उसकी निगरानी करते थे। तमिलनाडु में कट्टरपंथी ब्राह्मण किसी दलित स्त्री के साथ सोने के बाद अपनी जनेऊ तोड़ देता था पवित्रकारी स्नान करके नया जनेऊ धारण कर फिर वह ब्राहमण हो जाता था। दलित स्त्रियों पर बलात्कार यौन हिंसा के जरिए प्रभुत्व का प्रदर्शन होता है। इसके बावजूद न्यायाधीश कहता है। 'ब्राह्मण दलित स्त्री का बलात्कार नहीं कर सकता।'पंडित का धर्म बर्तन भेद मानता है, बिस्तर भेद नहीं मानता। मनु कहते हैं बंध्या को आठवें में मृतप्रजा को दसवें स्त्री जननी का ग्यारहवें में त्याग कर देना चाहिए परन्तु परित्यक्ता स्त्री को स्वतंत्र नहीं छोडना चाहिए, उन्हें घर में दासी की तरह रखना चाहिए। भागने का प्रयास करे तो रस्सी से जकड़ देना चाहिए। इसे अतीत समझने की भूल न करें सिनेमा व टी.वी. लम्बे समय तक इसी छवि को पोषित करता रहा और आज भी यही बताता है कि बाहर काम करने वाली लड़कियाँ दूसरे मर्दों को फाँसती है। मार्क्स लिखते हैं कि औरत की वास्तविक विशिष्टिताएँ ही उसके लिए हानिकारक बन गयी और प्रकृति के तमाम नैतिक गुण उसे गुलाम बनाने और तकलीफ देने के साधन बन गए। मार्क्स जीवन पर्यंत पितृसत्ता के प्रभुत्व से आरंभ होने वाली गुलामी शोषण के खिलाफ आवाज उठाते रहे। स्त्री संबंधी मार्क्सवादी दर्शन ने ही अगस्त बैबल से नारी और समाजवाद पर किताब लिखवा ली। फ्रांस क्रांति के पश्चात महिला संगठनों का बेदर्दी से दमन किया गया। राजनीति में हिस्सा लेने वाली महिलाओंको जलावतनी के लिए विवश होना पड़ा। 1970 में जब फ्रांस के समाजवादी और मार्क्सवादी औरतों के एक ग्रुप ने यूनवर्सिटी के खिलाफ प्रदर्शन किया तो सबसे तीखी प्रतिक्रिया रेडिकल पुरूषों की थी जो स्वयँ फ्रेंच सरकार के विरूध्द लड़ रहे थे। 1885 में रख्माबाई के केस के खिलाफ लड़ने वालों में बालगंगाधर तिलक जैसे भी थे। हिंदू कोड बिल का विरोध करने वाले लागों में प्रखर नेता थे। रमाबाई के पक्ष में दिए गए फैसले को मुख्य न्यायाधीश समेत दो जजों की बेंच ने बदल दिया। रख्माबाई ने अपनी सहेली को पत्र में लिखा ''हम सभी कोर्ट के निर्णय पर आश्चर्य चकित नहीं हमारा आष्चर्य यह है कि शक्तिशाली हिन्दू कायदे, बलशाली सरकार लगभग 13 करोड़ पुरूष और 33 करोड़ देवी देवता इन सभी ने रख्माबाई को निर्मूल करने हेतू षडयंत्र रचा और रख्माबाई जैसी असहाय स्त्री ने आवाज उठायी। रख्माबाई की इस आवाज ने स्त्रियों की दुनिया बदल कर रख दी। सीमंतनी उपदेश की अज्ञात स्त्री लिखती है– अर्धांगिनी इसमें आधा अंग पीड़ा में रहे आधा मौज उड़ाए। स्त्रियों के लिए पतिव्रता धर्म पुरूशों के लिए कोकषास्त्र। हिन्दू देवताओं से शादी करा देते हैं स्त्रियों की और मुस्लिम कुरान शरीफ से जिसे हके बख़्शाई कहते हैं। मैं जानना चाहती हूँ कि जिन मंदिरों और मस्जिदों के दरवाजे स्त्रियों के लिए बंद होते है उन देवताओं और धर्मग्रंथों से स्त्रियों के ब्याहते लज्जा नहीं आती। रूशन्दरी देवी की 'आमार

जीवन' 1976 में आती है ताराबाई शिदे कीं स्त्री पुरूष तुलना 1882 में रमाबाई 1886 में द हाईकास्ट हिंदू विमेन लिखती हैं। मीरानंदा के प्रश्न के परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है, स्थितियों को। 'ऐसी क्या चीज है जो विधवा को अशुभ और सती को शुभ बना देती है।' हिन्दू धर्म में पति की मौत के लिए पत्नी को जिम्मेदार माना जाता है। इसे पत्नी का कर्मगत अपराध कहते हैं। सती होकर वह अपने बुरे कर्म का पश्चाताप करती है। गांधी जी कहते हैं दृ दूषित प्रथाओं के बल पर मूर्ख से मूर्खअयोग्य से अयोग्य पुरूष तक स्त्रियों पर श्रेश्ठता प्राप्त करते आए हैं पंडित नेहरू लिखते हैं कि ये स्त्रियों का काम है वे आदमी के बनाए हुए रीतिरिवाजों और कानून के जुल्म से अपने को मुक्त करें। अंधसंस्कार के कारखाने बनी गुड़ियों से खेलने का खतरनाक मंजर जिन्होने देखा समझा वही इसके खिलाफ खड़ा हुआ। द्रौपदी, मीरा, ललद्द, अक्कमहादेवी, शकुंतला, सावित्रीबाई, रख्माबाई, रमाबाई, गांधी, नेहरू, बाबसाहेब, मार्क्स, स्टुअर्ट मिल, सिमोन जाहिदा, हिना, तहमीना, तसलीमा। एक बेहतर दुनिया के लिए संघर्शरत योध्दा रहे। किशोरीदास वाजपेयी जैसे भाषा

षास्त्री लिखते हैं दृ उच्चशिक्षा स्त्रियों के लिए हानिकारक है। लड़कियों को विज्ञान नहीं गृहविज्ञान पढ़ना चाहिए। आज की शिक्षा स्त्रियों को स्वाभाविक गुण मातृत्व, सतीत्व, सदगृहिणी, शिष्टाचार स्त्रियोचित हार्दिक उपयोगी सौन्दर्य माधुर्य को नष्ट कर रहा है।सौन्दर्य और माधुर्य केन्द्रीय उपलब्धि मानी गयी सनातन नारी की। लड़कों के साथ पढ़ेंगी तो लड़कियाँ अपना चरित्र पवित्र नहीं रख पायेगी। प्रश्न यह है कि चरित्र शब्द पुरूष के साथ क्यों नहीं जुड़ा है। वे बलात्कार के बाद भी पवित्र, और मात्र संदेह के आधार पर स्त्रियों की आत्महत्या और हत्या। जाहिदा लिखती है शौहर ने बीवी का इसलिए कत्ल कर दिया कि बीवी ने उसके साथ सपने में गद्दारी की थी। कोई स्त्री आपके वश में नही तो उसका चारित्रिक हनन कर दो। पतित स्त्रियाँ हरे हरे। इस देश का गौरव तो सीता और पद्मिनी रही है उन्होंने आपका माथा गर्व से उन्नत किया। जीने की इच्छा रखनेवालियों ने तो आपका माथा शर्म से झुका दिया। एक मासूम सा प्रश्न पूछँ सीता को जिस आग ने नहीं जलाया उसने पद्मिनी को जला कैसे दिया। फिर दोनों ही सही कैसे? बलात्कार हुई स्त्री कन्या का नाम छिपाया जाता है। वह कैसे मुँह दिखाने लायक नहीं रहती। सिनेमा की नायिका कहती है मैं तुम्हारे लायक नहीं रही। मैं किसी को मुँह दिखाने लायक नहीं रही। इसका अर्थ क्या है। शारीरिक शुचिता याने क्या? 1979 में पाकिस्तान में कानून बना कि सजा बलात्कार की शिकार औरतों को मिले। इसी के चलते अंधी साफिया बीबी के मुँह पर थप्पड़ मारे गए। और बीस कोड़े लगाए गए। इस्लामी आर्डिनस ने मर्द को खड़े कर और औरतों को बिठा कर कोड़े लगाने कानून पारित किया। चादर और चारदीवारी के रहनुमा जियाउलहक को ईस्लाम

धर्म का रक्षक माना गया। सन् 1977 में जिन्ना मेड पाकिस्तान को निरस्त कर दिया गया। सन् 1944 में जिन्ना ने अपने एक भाषण में कहा कि 'यह इंसानियत के खिलाफ एक जुर्म है कि हमारी औरतें घर की चार दीवारी में कैदियों की सी जिंदगी गुजारें। हमारी औरतें जिन शर्मनाक हालात में जिंदगी गुजारने पर मजबूर है, उसका कोई औचित्य नहीं है। आप जिंदगी के हर क्षेत्र में उन्हें कामरेड की तरह लेकर चलें।' लेकिन आजादी की तकरीर की जिक्र करते हुए जाहिदा हिना लिखती हैं ''उसमें पाकिस्तान में हिन्दू मुस्लिम सिक्ख इसाई की मजहबी आजादी का जिक्र है। ईंट पत्थर से बने मंदिरों मस्जिदों गिरजाधरों का जिक्र है परन्तु औरतों के लिए एक लफ्ज भी नहीं है।'' बस यही है औरत की जगह। ज्ञान और राष्ट्रवाद की राजनीति में रख्माबाई जैसी स्त्रियाँ कहाँ हैं?

कुछ मुहावरें 'दूधों नहाओ, पूतो फलो,' बिगड़ता दूध है मट्ठे का क्या बिगडेगा, चूडियाँ पहनी है क्या, मर्द होकर रोते हो, महिलाओं की नाक न हो तो मल खायें। जोर बोले तो 'मारी'। धूमे तो 'मीरा'। लड़की बिगड़ गयी है का अर्थ वही नहीं होता जो लडके के बिगड़ने का अर्थ होता है। मीरा गाती हैं –

म्हारो मण – मगण स्याम लोक क हया भटकी

मीरागिरधर हाथ बिकाणी लोक कह्या बिगड़ी

काजल टीकी राणा त्यागे भगवी चादर पहर

'वीर भोग्या वसुंधरा' अब समझ में आता है, कि स्त्री को धरती क्यों कहा गया? इन्हीं वीरों के खिलाफ युध्द का शंखनाद मीरा ने किया था। सहज समझा जा सकता है, एक स्त्री जिन्दगी की किस दुर्गम ऊँचाई पर पहुँच कर कह सकती है –

राणाजी म्हाने बदनामी लगे मीठी

कोई निंदो कोई बिंदो चाल चलूँगी अनूठी

गिरधर गास्या और सती नहीं होस्यां

गली में जाति के और घर में पितृसत्तात्मक के तमाचे का जब समागम हुआ तो इसने दलित स्त्रीवाद को जन्म दिया। गोपालगुरू जी और सुंदर रूक्काई जी के बीच एक संवाद है – ''दलित आंदोलन में पितृसत्ता का विद्रुप चेहरा स्त्री आंदोलन में जातिव्यवस्था का विकृत रूप पाकर दलित स्त्रियों ने अपने को अलग से संगठित किया।'' यह दोहरे अभिशाप के संघर्ष यात्री है इनका अपने ही साथियों से सवाल है –

दामन पे कोई छींट न खंजर पर कोई दाग

तुम कत्ल करे हो कि करामात करे हो।

एक ओर सांस्कृतिक तानाशाही छल रही थी बेदाग रूप रंग गोरी त्वचा को लेकर दूसरी ओर मार्किटिंग विशेषज्ञ चाहते हैं उन्मुक्त भोग उपभोग को नारी मुक्ति का पर्याय बनाओ, दिल्ली के व्यापार मेले में काम करने के लिए चुनी गई लड़कियों को दिहाड़ी उस अनुपात में दी गयी जिस अनुपात में वे बदन उघाडने को तैयार हुई 300 रू साडी वाली को 3000 मिनीस्कर्ट वाली को। स्त्रियों के लिए पुराण से लेकर बाजार तक जो भी नीतियाँ बनी छल ही तो थी। बाणशय्या पर लेटे भीष्म को याद करें महाभारत का शांति पर्व कौरवों और पांडवों को जब राजनीति सिखा रहे थे तो द्रौपदी हँस पड़ी। स्त्रियों का यूँ हँस पड़ना उलट बाँसी है। उन्हें समझना होगा। विनोद पदरज जी के इन्हीं पंक्तियों के साथ –

उसका हँसना युध्द

पूरी सदी के विरूध्द